शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

श्रम टालना : अशांति का कारण

विनोबा

आज जो कुल दुनिया में कशमकश चल रही है, उसके कई कारण हैं। 'शरीर परिश्रम टालने की वृत्ति' उसमें सबसे बड़ा कारण है। इन दिनों कुछ लोग शरीर परिश्रम करते हैं और कुछ लोग शरीर परिश्रम टालते हैं। जो लोग शरीर परिश्रम करते हैं, उनके दिलों में भी उस काम के लिए आदर नहीं है। कोई ऐसी लाचारी है, जिसमें काम करना पड़ता है। अगर वह लाचारी न रहे, तो आज जो काम करते हैं, वे लोग भी इस काम को छोड़ देंगे। शरीर परिश्रम के लिए किसी में निष्ठा नहीं है। इसी से किसान सोचता है कि मुझे जो काम करना पड़ता है, उससे मेरा लड़का बच जाये। वह भी कुर्सी पर बैठे और कम-से-कम मेहनत में ज्यादा-से-ज्यादा इज्जत प्राप्त करे। किसान शरीर श्रम से हट रहा है। दूसरे लोग शरीर श्रम करते नहीं। इसलिए उत्पादन घटता है। आवश्यकताएं बढ़ाएं और उत्पादन घटायें, यही कशमकश का कारण और झगड़ों की बुनियाद है।

मनुष्य ने अपना मूल कर्तव्य नहीं पहचाना है और वह दूसरों के शोषण पर अपना पोषण करना चाहता है। यह जीवन की बहु भयानक रचना मानी जायेगी। जैसे जंगल का कोई जानवर दूसरे जानवरों को खाकर जीता है, वैसे ही अगर मानव समाज में भी एक के शोषण पर दूसरे का पोषण चलता रहा, तो वह बहुत ही भयानक रचना होगी। फिर वह मानव समाज नहीं कहा जायेगा, वह पशुतुल्य होगा। इससे बचने के लिए जीवन का ऐसा तरीका ढूंढना चाहिए, जिसमें किसी मनुष्य के पोषण के साथ दूसरे किसी का शोषण न जुड़ा हो। किसी के विरोध में न जाकर हमें अपनी जीविका चलानी चाहिए। इसके लिए यही उपाय होगा कि जो भी मनुष्य खाता है, वह उत्पादक परिश्रम, शरीर परिश्रम करे।

दुनिया के सभी झगड़ों का मूल रूप एक ही है। मनुष्य ने श्रम का स्थान पैसे को और प्रेम का स्थान संघर्ष को दिया है। आज पैसा और संघर्ष, दोनों बातें दुनिया को सता रही हैं। इन दिनों कुछ लोगों ने माना है कि प्रेमतत्व से उत्कर्ष नहीं होता, स्पर्धा से होता है। फिर श्रम टालने की कोशिश की जाती है और लोगों के दिलों पर पैसा कमाने की धुन सवार हो जाती है। संघर्ष और पैसा, ये दो दोष सब झगड़ों के मूल में हैं। फिर उसे कोई भी नाम दिया जाये। कहीं उसे 'हिंदू विरुद्ध मुसलमान' का नाम दिया जाता है, तो कहीं 'हिंदुस्तान विरुद्ध पाकिस्तान' का, कहीं इसे 'ब्राह्मण विरुद्ध ब्राह्मणेतर' का रूप आता है तो कहीं 'मालिक विरुद्ध मजदूर' का। इसके पचासों रूप दीखते हैं, पर मूलस्वरूप एक ही है। जिस तरह परमेश्वर अनेक रूप लेता है, उसी तरह राक्षस भी लेता है। अगर सब झगड़ों को खतम करना है, तो हरएक मनुष्य को शरीरश्रम से अन्न-उत्पत्ति के काम में योगदाना देना चाहिए।

दुनिया में जितने भी काम होते हैं वे सब मजदूर ही करते हैं - फिर वह चाहे खेत में हो, कारखाने में या खदानों में। मजदूरों के आधार पर ही हम सबका जीवन चल रहा है। दुनिया परमेश्वर के आधार पर चलती है, लेकिन परमेश्वर को हम

देखते तो नहीं, सिर्फ मानते हैं कि वह दुनिया का सारा भार उठा रहा है। किंतु हम देखते हैं कि मजदूर दुनिया का भार उठा रहे हैं। सिर्फ पहचानना बाकी है कि परमेश्वर मजदूरों के रूप में हमारे सामने खड़ा है। अगर इसकी पहचान हो जाये, तो दुनिया के सारे झगड़े मिट जायें और दुनिया में प्रेमभाव पैदा हो जाये। दुनिया में आज जो झगड़े हैं, उनका कारण यही है कि हम बिना परिश्रम किये अधिक-से-अधिक लाभ उठाने का सोचते हैं। जब तक स्वयं मजदूर बनकर हम मजदूरों में काम करने नहीं लगेंगे, तब तक मजदूरों में जाग्रति पैदा नहीं की जा सकेगी। और जब हम स्वयं मजदूरली करने लगेंगे, तब मजदूरी या वेतन अपने-आप बढ़ेगा, लोगों को स्वच्छता की शिक्षा मिलेगी और कानून भी बनेंगे। सुधर तेजी से होगा। हम मजदूर बनेंगे तो मजदूरों में जाग्रति होगी। इस प्रकार पढ़े-लिखे लोग मजदूर बन जायेंगे, तो मजदूरों का जीवन ऊपर उठेगा।...हमें मजदूरों का काम करना है, लेकिन उसमें भी उन्हें दिखाना चाहिए कि हम जो काम कर रहे हैं, उसमें बुद्धि है, कौशल है। हमें उनके सामने मजदूरी के काम में भी आदर्श उपस्थित करना होगा। हमें दिखाना होगा कि हमारे काम से उन्हें नयी दृष्टि मिल रही है, उनका लाभ हो रहा है। हमें उनका काम करना है, यानी उनके समान जड़तापूर्वक नहीं करना है।

- साम्ययोगी समाज (विनोबा साहित्य, खण्ड 18)